Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 7 | ISSUE : 3 | MARCH 2021

नरेंद्र मोहन की काव्य सृष्टि

डॉ सुभाष चंद्र डबास 'चौधरी' [1]

[1] **एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, राम लाल आनंद महाविद्यालय, बेनीतो जुआरेज, मार्ग नई दिल्ली,110021.**

ABSTRACT:

KEYWORDS:

कविता नरेंद्र मोहन के जीवन यथार्थ की ऐसी जीवन्त व प्रामाणिक सृष्टि है, जो जीवन के विभिन्न अनुभवों, विषमताओं, कटुताओं,ऐतिहासिक -भौगोलिक- सामाजिक- पारिवारिक संदर्भों को अपनी काव्य अनुभूति की संरचना एवं अभिव्यंजना शिल्प में पूरी ताकत और प्रभावोत्पादकता के साथ प्रस्तुत करती है । नरेंद्र मोहन की कविता आत्म संघर्ष से जन संघर्ष में क्रमश: बदलती और जुड़ती हुई यथार्थ की पहचान कराने वाली कविता है । कवि की अंतर्मुखी वृत्ति, रचनाशीलता, विद्रोह और संघर्ष, तनाव, विद्रोह और वैचारिकता, दीर्घकालिक तनाव ,सांप्रदायिक वैमनस्य, भाषा की रचनात्मकता आदि संवेदनात्मक पक्ष कविता ,विचार कविता और लंबी कविता की

संवेदनशीलता और कलात्मकता में क्रमशः उद्घाटित होते चले जाते हैं । 'इस हादसे में,' 'सामना होने पर,' 'एक अग्निकांड जगह बदलता', 'हथेली पर अंगारे की तरह', 'एक सुलगती खामोशी', 'संकट दृश्य का नहीं' आदि काव्य संग्रह जीवन के विभिन्न अनुभव और यथार्थजन्य विषमताओं को प्रामाणिकता के साथ शब्दबद्ध करते हैं। नरेंद्र मोहन ने बच्चों को विषय वस्तु का केंद्र बना कर कई कविताएं लिखी हैं । 'बच्चे की शक्ल में', 'बच्चा' और 'इस बच्चे को क्या हुआ' आदि कविताओं का इस संदर्भ में उल्लेख किया जा सकता है। ये कविताएं बच्चे की यन्त्रणामय स्थिति, डर, सहमेपन, खीझ आदि का मनोवैज्ञानिक एवं यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करती हैं।इन कविताओं में बच्चे की कारुणिक स्थिति का आत्मीयतापूर्ण प्रतिबिम्बन किया गया है।[1]फ्रायड का मानना है कि सृजन -प्रक्रिया में बच्चे और कवि की मन: स्थिति एक जैसी होती है।[2]

नरेंद्र मोहन की कविताएं बहता हुआ इस्पाती दस्तावेज बन गई हैं । क्योंकि कविता उनके लिए जीवित रहने का एक माध्यम है। कवि के जीवन का अभिन्न हिस्सा है । पूरे जीवन का संघर्ष, त्रासद अनुभव और घटनाएं- दुर्घटनाएं इनकी कविता के विषय बन गए हैं और काव्य प्रेरणा के स्रोत बनकर मानवीय मूल्यों और जीवन यथार्थ को प्रतिफलित करते हैं। इतिहास और वर्तमान के विभिन्न परिदृश्यों को समकालीन संदर्भ में जोड़कर कवि एक नया अर्थ पैदा करता है। इतिहास और देश विभाजन की लहूलुहान तस्वीर जीवन के त्रासद अनुभवों और बीभत्स दृश्यों को साकार करने लगती है।[3]

हत्याकांड, बलात्कार और आगजनी के जलते दृश्य कवि को भीतर से आंदोलित कर देते हैं। आग की लपट से 'कविता के पौधे' भी कुप्रभावित होने से बच नहीं पाते हैं। कवि यह कैसे स्वीकार कर सकता है कि 'मेरे साथियों को आग में झोंक कर/ तुम मुझे शांत और निर्विकार रहने की सलाह दे रहे हो /कविता में/ जबकि मैं महसूस कर रहा हूं /कविता को/ हथेली पर अंगारे की तरह।'

समकालीन कविता के बदलते हुए मिजाज और तेवर को उसकी वैचारिक प्रवृति, प्रकृति और संरचना को पहचान कर आत्मसात करने का पहला प्रयास नरेंद्र मोहन का ही माना जा सकता है। तत्कालीन परिवेश और उसकी विसंगति, विडंबना, व्यवस्था, भाषायी संघर्ष और कवि का दायित्व बोध आदि नरेंद्र मोहन की कविता के मुख्य स्वर कहे जा सकते हैं। नरेंद्र मोहन की कविताओं में समकालीन जीवन के अनेक पहलुओं और मुद्दों को उठाया गया है, जिन्हें विभिन्न स्तरों और कोणों से देखने, परखने और अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। नरेंद्र मोहन विचार कविता के प्रवर्तक कवि माने गए हैं। 'कविता की वैचारिक भूमिका' में उन्होंने कविता में विचार के महत्व को बराबर स्थान दिया है।

समसामयिक संदर्भों में विषम परिस्थितियों, विद्रूपता, अस्तित्व संकट आदि को केवल भावना के आधार पर झेल पाना मुश्किल

है। ऐसी जटिल अनुभूति का निरूपण विचार, तार्किकता और विवेक के माध्यम से ही संभव हो सकता है। कविता में अनुभूति पक्ष को स्वीकारते हुए कवि ने अनुभववाद से मुक्ति की बात पर जोर दिया है । विचार कविता वर्तमान जीवन की जटिलताओं, विषमताओं और कटु यथार्थ की व्याख्या बौद्धिक धरातल पर करती है। इस कविता में विचार के साथ ही व्यंगऔर विद्रोह के पक्ष उसके अन्य सहयोगी उपकरण बन जाते हैं । नरेंद्र मोहन की कविता की रचना प्रक्रिया विचार से संवेदना की ओर अग्रसर हुई है। 'इस हादसे में' संग्रह की कविताएं विचार और अनुभव को रेखांकित करती हैं, तो 'सामना होने पर' काव्य संग्रह में विचार और अनुभव एक दूसरे में संघनित होते चले गए हैं। 'एक अग्निकांड जगह बदलता' शीर्षक काव्य संग्रह विचार और अनुभव पक्ष को एक विशिष्ट संतुलन में प्रस्तुत करता है। नरेंद्र मोहन कविता को 'शहीदी बीड़' की भांति उठाएं हुए हैं । इसलिए कविता उनके लिए केवल रोमानी व्यापार नहीं है । उनकी कविता में बाह्य आभ्यंतर तनाव और परिस्थिति जन्य व्याकुलता एक साथ दिखाई पड़ती है। 'दृश्यों को महज ताकते नहीं रह सकते/ आप /उन्हें भिड़ाने लगते हैं /और कड़े जोखिम की आग में /गलने लगते हैं सुरक्षा कवच'। कवि के संकल्प की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति 'आखिर कब तक' कविता में है, तो अवसरवादी कवियों की पोल कवि 'पोले कविवर' कविता के तीखे व्यंग्य के द्वारा खोलता है। मुक्तिबोध ने 'अंधेरे में' कविता में प्रयुक्त व्यंग्य द्वारा अवसरवाद और भोगवादी संस्कृति से टक्कर लेने की ताकत दिखाई है- 'मर गया देश अरे, जीवित रह गए तुम।' फैंटेसी -सृजन और उत्तरदायित्व-निर्वाह की इस निरंतरता में कवि नरेंद्र मोहन की अंतस चेतना में 'मुक्तिबोध को याद करते हुए' कविता बिंब-प्रवाहित होने लगती है। 'फैंटेसी की दुनिया के मालिक/ क्या फैंटेसी की आग/ जला भी सकती है इस कदर/ यथार्थ में कि आदमी/ झुलसा हुआ महसूस करें /पूरी तरह '। नरेंद्र मोहन फैंटेसी में यथार्थ को पहचानने और पकड़ने का कार्य करते हैं ,उसेआत्मसात भी करते हैं। यह बात सही है कि कविता में फैंटेसी-सृजन केवल आनंद प्रदायक ही नहीं होता , बल्कि यथार्थ को समीप सेपहचानने और ग्रहण करने का भी अभिसूचक होता है।[4]

धूमिल की 'पटकथा' और राजकमल चौधरी की 'मुक्ति प्रसंग' जैसी लंबी कविताएं जिस व्यंग्य, विद्रूपता और पैरोडी को कलात्मक ढंग से अभिव्यंजक बनाती हैं, उसी तरह से नरेंद्र मोहन ने जीवन की संपूर्ण विषमताओं, यथार्थ अनुभवों और विरोधों को व्यंग्य और यथार्थपूर्ण शैली का प्रयोग करते हुए कलात्मक ढंग से अभिव्यंजित किया है। नरेंद्र मोहन व्यंग्यात्मक शैली को एक औजार के रूप में प्रयोग करते हुए जीवन की विसंगतियों, विडंबनाओं, विद्रूपताओं और नकाबपोश चेहरों को बेनकाब करने में सफल रहे हैं।[5] डायरी क्रम, एक जमाना डूबता हुआ, नीली पोशाक, स्पंदन, चीखता हूँ मैं-आदि कविताएं अतियथार्थ शैली को प्रतीकित करती हैं। लंबी कविताओं के साथ नरेंद्र मोहन का नाम जुड़ जाना स्वाभाविक ही है, क्योंकि उन्होंने लंबी कविताएं लिखने के साथ-साथ लंबी कविताओं का संपादन और विवेचन -विश्लेषण भी किया है। 'लंबी कविताओं का रचना विधान 'और 'कहीं भी खत्म नहीं होती कविता' उनकी लंबी कविताओं से संबद्ध संपादित रचनाएं हैं और 'एक अग्निकांड जगहे बदलता', 'एक अदद सपने के लिए' और 'खरगोश चित्र और नीला घोड़ा' जैसी लंबी कविताएं एक ओर मानवीयता की संघर्ष गाथा, देश विभाजन की त्रासदी ,पशुता ,धर्मांधता , कट्टरता, आतंकवाद, हिंसात्मक त्रासदी को यथार्थपूर्ण और जीवंत शैली में प्रस्तुत करती हैं, तो दूसरी ओर मानवीय संवेदना, सृजनात्मकता और प्रेम की भावना को अभिव्यंजित करती हैं। नरेंद्र मोहन कल्पना की शक्ति और रचनाशीलता के महत्व को भली-भांति समझते हैं। कल्पना की उर्वरता अन्यान्य ज्ञान क्षेत्रों में गतिशील रहकर उन्हें विस्तार देती है। नरेंद्र मोहन भी अपनी कविता में विभिन्न दृश्यों का चित्रण करते हुए सत्यान्वेषण के साथ मुखरित होना चाहते हैं। नरेंद्र मोहन की सृजनात्मकता और रचना कर्म में कल्पना का विशेष महत्व है।[6] कविता में चित्रित दृश्य को अर्थ विस्तार देने के लिए कल्पना का आश्रय लेना चाहते हैं। 'मेरा संकट दृश्य का नहीं/ दृश्य के सामने गूंगा हो जाने का है / मुझे कल्पना दो कालिदास / मुझे कल्पना दो।' अज्ञेय ने 'मौन ही अभिव्यंजना है' के कलात्मक लाघव को श्रेयस्कर माना और नरेंद्र मोहन कविता में मौन से आगे की जड़ता, निष्क्रियता और गूंगेपन की यथास्थिति को तोड़कर कविता में नए अर्थ भर देना चाहते हैं। नई कविता की यथास्थिति को तोड़कर समकालीन कविता और विचार कविता के भावबोध एवं रचनाकर्म को विकसनशील बनाने में नरेंद्र मोहन का विशेष योगदान है।[7]

अंत में हम कह सकते हैं कि नरेंद्र मोहन की कविता में काव्य-अनुभव और जीवन-अनुभव समानांतर रूप से क्रियान्वित हैं। यथार्थ अनुभव कविता के लिए उर्वर भूमि का काम करते हैं और कवि के विचार उसका पोषण करते हैं। इस प्रकार नरेंद्र मोहन कविता में विचार, अनुभव, संघर्ष, विद्रोह, प्रेम और यथार्थ के भावों को एक साथ सहेज कर चलते हैं। कवि इतिहास को वर्तमान तक तानकर कविता और जीवन को नई अर्थवत्ता प्रदान करते हैं।

REFERENCES

1. समकालीन संदर्भ और नरेंद्र मोहन की कविता, पृ36
2. फ्रायड, लियोनार्दो द विंची, पृ120
3. सृजन के आईने में नरेंद्र मोहन, पृ17

4. जॉर्ज इलियट क्रिएटिव कनफ्लिक्ट, पृ3

5. समकालीन संदर्भ और नरेंद्र मोहन की कविता, पृ 48

6. नरेंद्र मोहन : सृजन और संवाद, पृ 86

7. वही, पृ60